# मुस्कुराहटें... अभी बाकी हैं

प्रीति 'अज्ञात'
पुनित जैन 'चीनू'

# ईशा त्रिवेदी

निवासी : मुम्बई

व्यवसाय : चित्रकारी एवं फोटोग्राफी

जीवन एक कला है और मैं एक कलाकार हूँ....

मेरा मानना है कि केवल चित्र बनाना ही नहीं, उसे सराहना भी एक कला है... खाना बनाना ही नहीं, उसे आनंद ले कर खाना भी एक कला है... यही नहीं, प्रतिदिन हम जो भी दैनिक कार्य करते हैं, सब एक कला है... और इस नाते हर मनुष्य एक कलाकार है... कला कि कोई सीमा नहीं, और कला की कोई परिभाषा भी नहीं है... लेकिन यह ज़रुर है की बिना दर्द के कलाकार नहीं बनता, और जिसे कला मिल जाये, वो कभी दु:खी नहीं हो सकता... क्योंकि कला वो माध्यम है जिससे हम अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त कर सकते हैं.... !

मैं कोई कवियित्री नहीं, ना ही मुझे शब्दों का ज्ञान है... समझ है तो केवल भावनाओं की, एहसासों की... जब ज़िंदगी ने जो भी दिखाया, मैंने उसे उस ही पल अपनी डायरी में लिख दिया... और वही मेरी कविताएँ बन गयी... मैं शुक्रगुज़ार हूँ हमारे संपादक पुनित जैन 'चीनू' और प्रीति 'अज्ञात' कि जिन्होंने मेरी कविताओं को प्रकाशन के लायक समझा और अपनी किताब में मेरी कविताएँ छापने का वादा भी निभाया!

संपर्क :

E-mail : trivediisha@yahoo.com

website : www.trivediisha.com

# देखा है !! 1

तमाशे तो कई देखे होंगे तुमने,
मैंने तमाशा अपनी बर्बादी का देखा है !
आँसू तो कई बहाए होंगे तुमने,
मैंने आँखों से खुद को गिरते देखा है !!
देखा हैं खुद को धोखा देते हुए,
धोखे से खुद को भी कई बार देखा है !

देखा हैं अपना क़त्ल होते हुए,
अपने कातिल को मर के करीब से देखा है !
किस्से कहानियाँ तो बहुत सुनी होगी तुमने,
मैंने खुद को हादसा बनते देखा है !

लोगों ने तो कई बार गिराया होगा तुम्हें,
मैंने अपनी आँखों से खुद को गिरते देखा है !!

# देखा है !! 2

हँसते-खेलते परिवार को मैंने,
एक पल में बिखरते देखा है !
हर एक इंसान को मैंने,
लड़ते-बिछड़ते देखा है !
जहाँ हर तरफ प्यार था,
वहाँ अचानक नफरत को घर करते देखा है !

देखा हैं खुद को सदमे में मैंने,
सदमे में खुद को पलते देखा है !

उस छोटी सी उम्र में मैंने,
बुढ़ापे का तजुर्बा कर के देखा है !

सिसकते-बिलखते हुए मैंने,
कई रातों को कट-ते देखा है !

# देखा है !! 3

प्यार में तो बहुत मरते हैं, लेकिन,
मैंने मौत से प्यार कर के देखा है !
जिंदगी को मौत से, मौत को जिंदगी से मिलते देखा है !

गिरके तो बहुत संभले होंगे, लेकिन,
मैंने खुद को गिर के उड़ते हुए देखा है !
अपने सपनों की कहानी लिख मैंने
कहानी को हकीकत बनते देखा है !
उन सपनों पर हँसने वालों को मैंने,
जिंदा मजाक बनते देखा है !

जिंदगी पर तो बहुत हँसे होंगे तुम,
मैंने अपनी जिंदगी को हँसते देखा है !

# देखा है !! 4

रंगों से होली तो सभी खेलते हैं, लेकिन,
मैंने रंगों में समाके देखा हैं !
हर रंग को अपनाके मैंने,
जिंदगी को सजते - संवरते देखा है !

प्यार का गुलाबी रंग ओढ़े,
प्यार में पागल बनके देखा है !
मायूसी की काली रातों में,
सन्नाटे में खुद को बिलखते देखा है !
नीले आकाश के नीचे मैंने,
हरी घास पर सोके देखा है !
लाल सिन्दूर और लाल अल्ते से,
खुद को सुहागिन बनते देखा है !
स्वर्ण आभूषणों से सज के मैंने,
केसरी लिबास में ढलके देखा है !

रंग तो सभी देखें होंगे तुमने,
मैंने सभी रंगों को जी के देखा है !!

# देखा है !! 5

फूलों से खुशबू तो बहुत चुराते हैं, लेकिन,
मैंने फूलों में खुशबू पिरोके देखा है !
प्यार में तो इन्तजार बहुत करते हैं, लेकिन,
मैंने इन्तजार से प्यार कर के देखा है !

एक कल्पना के सहारे जी रही थी,
उस कल्पना को सच में ढलते देखा है !
देखा हैं प्यार का अंजाम मैंने,
प्यार को ही अंजाम बनते देखा है !

जो मांगने से भी डरती थी मैं,
उस मांग को सजते देखा है !

# देखा है !! 6

जिंदगी की सिलवटो में मैंने,
करवट बदलके देखा है !
हर पल की गिनती कर मैंने,
जिंदगी बसर करके देखा है !
थम गयी जिंदगी, रुक गयी सांस भी,
इसी तरह मैंने मर-मर कर जी के देखा है !

दिल के दरवाजे को मैंने खुलते,
खुलके बंद होते देखा है !
अपनी आरजू को मैंने,
ख़ाक में दफन करके देखा है !

जो सच नहीं ज़हर का प्याला था,
वो कहर खुद पर गिरते देखा है !

# देखा है !! 7

वो मिले भी तो पल दो पल के लिए,
आये और फिर चल दिए !
उन कुछ लम्हों में मैंने,
प्यार का एहसास कर के देखा है !
उनकी आँखों में खो के मैंने,
खुद को पा कर देखा है !

चल दिए वो, ना मिलना हुआ फिर कभी,
उन कुछ पलों की यादों के सहारे मैंने,
अपना जीवन व्यतीत करके देखा है !

अलग हुए उनसे हम, साँसें मानो थम सी गयी,
दिल की धड़कनों को मैंने बढ़ते – रूकते देखा है !
इतना प्यार कर के भी उनसे,
खुद को बिछड़ते देखा है !

# देखा है !! 8

झूठी मुस्कुराहटों के सहारे मैंने,
हर गम को छुपा के देखा है !
अकेले में खुद से कर बातें मैंने,
अकेलेपन को अपना बनाके देखा है !
देखा हैं खुद को ढूंढ़ते हुए,
सन्नाटे के शोर में इस कदर खोके देखा है !
की एक जगह टक-टकी लगाये मैंने,
खुद को मूरत बनते देखा है !

जमाने से तो बहुत लड़े होगे तुम,
मैंने खुद से लड़-के देखा है !!

# देखा है !! 9

बार-बार प्यार में हार कर भी,
मैंने प्यार पर ऐतबार करके देखा है !
किस्मत के धोखे के बावजूद मैंने,
किस्मत को मौका दे के देखा है !
हाथों की लकीरों को चुनौती देकर मैंने,
खुद पर भरोसा करके देखा है !
गिरते फिसलते मैंने,
जिंदगी से लड़ के देखा है !

देखते हैं और कितने इम्तेहान लेगी जिंदगी मेरी,
मैंने उसके हर सवाल का जवाब खुद बनके देखा है !

# एक कली

किया भरोसा आँखें मूँद के,
किया न किसी और पर ऐतबार,
प्यार का उस पर नशा था,
जाना था उसे पिया के द्वार !

अनजान थी इस बात से,
वो भँवरा चंचल-बदनाम,
ना एक कली का हुआ था कभी,
ना होगा तेरा ऐ गुल़फाम !

आज भी नहीं जानती, नहीं मानती,
कि मुरझा गयी कलियां सभी,
इस भँवरे के प्यार में,
सूखी हैं उनकी जिंदगी आज इंतजार में !

ले गया उन कलियों का रस-रंग,
ना सोचा क्या होगा उनका कभी,
टूट चुकी हैं आज ये,
मिट्टी से मिल रही हैं कलियाँ सभी !

मिटा कर उनकी हस्ती,

भँवरा है इस कली के पास,

मिटने से बचना चाहती हैं,

उस एक कली को कलियाँ हजार !

रुक जा ऐ नादान,

की तुझे इल्म नहीं सच्चाई का,

ये भँवरा हैं आशिक,

हर कली का, हर कलाई का,

थम जा, संभल जा,

जो रुक जाएगी- बच जाएगी,

नहीं तो एक दिन हमारी तरह,

तू भी पछताएगी !

ना होगा साथ तेरे ये भँवरा, ना ये जहान,

तेरा साथ तो तेरी ये खुशबू भी छोड़ जाएगी !

# भ्रम

जिंदा होती ज़िंदगी,
जो हम हकीकत से ना टकराते,
जो न होता ये सामना,
तो आज हम भी मुस्कुराते,
अगर खो भी गए थे सपनों में,
तो यहाँ कौनसा खुद को पा लिया ?
कौनसा जिंदा हैं यहाँ,
जो उस जहान में मर जाते !

सपना हैं जिंदगी,
उसे तोड़ने की कोशिश ना कर,
जिन आँखों में हैं कैद सपने,
उन्हें खोलने की तू तकलीफ ना कर !

किस काम का वो सच,
जो हँसते से छीन ले हंसी,
बात वो करो,
जो मुर्दे में जान डाल दे !!

# ऐ खुदा !

इतना भी ना तोड़ तू मुझे ऐ खुदा,
कि भरोसे से मेरा भरोसा ही उठ जाए !

इतना भी ना कर मुझे खुशियों से तू जुदा,
कि जिन्दगी से मेरा हर नाता ही टूट जाए !

थोड़ा तो रहम कर, न हो इतना भी तू खफा,
कि मनाने में मेरी उम्र ही घट जाए !

तू हैं, मुझे इस बात का कुछ तो यकीन दिला,
ना कर मजबूर कि तेरे नाम से नफरत मुझे हो जाए !

# सपने

कौन कहता हैं की सपनों की सख्शियत नहीं होती,
हकीकत नहीं होती उनमें, तबीयत नहीं होती !

सपना मेरा मेरी जिंदगी थी,
जी उठी आज जिंदगी मेरी,
हंसने वाले मजाक बन गए,
हंसने लगी जिन्दगी मेरी !

कहता रहा जमाना, मैं करती रही अपनी कही,
देखा करें जमाना, मैं अपनी जिद् पर अडी रही !

सपना मेरा मेरी खुशी थी,
खुश हो उठी जिंदगी मेरी,
समझाने वाले खुद सवाल बन गए,
जवाब में मिली मुझे जिंदगी मेरी !!

# ज़िंदगी में मेरी एक तू ही बचा है !!

देखते ही उनको हम ये दिल थे दे बैठे,
और उस जालिम को इस बात की ना फिक्र, ना पता है !

ना है यकीन, है उन्हें इस बात पर भी शक,
कि इन आँखों का इकरार-ए-मोहब्बत सच्चा है !

कहते है की ना है उन्हें इस बात की ख़बर,
कि वो खुद इस बेदर्द बीमारी की वजह है !

हम बन चले हमसफर, उन्हें पता भी ना चला,
कहते है कि इस राह में राही अकेला है !

रहते है इस दिल में, धड़कनों में है बसे,
और पूछते है फिरते, ठिकाने का पता है !

जान के अनजान बनते है वो शौक से,
दिल जलाने की भी ये खूब अदा है !

है बस इतनी ही फरियाद कि ना होना कभी जुदा,
अब जिंदगी में मेरी एक तू ही बचा है !